ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 169-171
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

आर्य समाज के कन्या गुरूकुल महाविद्यालय सासनी का महिला शिक्षा में योगदान

1. अमृता सिंह
2. प्रो0 सुगम आनन्द

शोध अध्येत्री– हिन्दी विभाग, डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या (उ0प्र0), भारत

Received-08.09.2023, Revised-15.09.2023, Accepted-21.09.2023 E-mail: peetambarask@gmail.com

सारांशः ***कन्या गुरूकुल हाथरस महाविद्यालय (सासनी) हाथरस भारत का सर्वप्रथम कन्या गुरूकुल है, जिसकी स्थापना पंडित गणपति के पुत्र श्री मुरलीधर भज्जूराम देवर दाल निवासी हाथरस द्वारा 6 अगस्त 1909 में हुई। प्रेरणास्रोत स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती रहे। गुरूकुल हेतु जमीन समाज के लोगों द्वारा क्रय की गई। 24 अगस्त सन् 1910 में इस गुरूकुल का अस्तित्व जगमगाने लगा। इस गुरूकुल का उद्देश्य कन्याओं को प्राचीन भारतीय वैदिक वातावरण में रखकर भारतीय संस्कृति के अनुरूप सीधा–सादा जीवन बिताते हुए, संस्कृत व्याकरण, हिन्दी, अंग्रेजी, वेद दर्शन, उपनिषद्, इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान, गृह विज्ञान, भारतीय संस्कृति, संगीत, व्यायाम मनोविज्ञान, कम्प्यूटर आदि की शिक्षा देकर योग्य नागरिक बनाना है, जो आगे चलकर आदर्श जीवन बिताते हुये देश, धर्म और समाज की सेवा में सहयोग दे सकें।***

कुंजीभूत शब्द– गुरूकुल, असूर्यपश्या, विद्याधिकारी विभाग, ब्रह्मचारिणियों, भारतीय वैदिक वातावरण, भारतीय संस्कृति, आर्य समाज।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. कन्या गुरूकुल हाथरस की स्थापना के इतिहास को प्रस्तुत करना।
2. कन्या गुरूकुल हाथरस में महिलाओं को दी गयी शिक्षा के स्वरूप का अध्ययन करना।
3. कन्या गुरूकुल हाथरस की आन्तरिक व्यवस्था का अध्ययन करना।
4. कन्या गुरूकुल हाथरस में प्रशिक्षित महिलाओं द्वारा समाज को दिये गये योगदान का अध्ययन करना।

आज के परिप्रेक्ष्य में नारी शिक्षा, चिकित्सा, अधिवक्ता, राजनीति, समाज सेवा, प्रशासनिक सेवा आदि विभिन्न क्षेत्रों में ऊँचाइयों को छू रही हैं, जिस पर गर्व किया जा सकता है, परन्तु वैदिक कालीन नारी को मध्य युग में असूर्यपश्या बना दिया था तथा वेद श्रवण से वंचित कर दिया गया था। राष्ट्र की प्रगति में समानता से योगदान करने वाली नारी केवल गृह तक सीमित रहकर हीन स्थिति को प्राप्त कर चुकी थी। ऐसी स्थिति में वर्तमान में स्वरूप तक लाने के श्रेय का एक भाग आर्य समाज को भी दिया जा सकता है।

आर्य समाज ने मैकॉले की शिक्षा पद्धति के विकल्प में जहाँ एक ओर डी0ए0वी0 कॉलेजों की आधार शिला रखी, वह गुरूकुल प्रणाली को पुनःजीवित कर एक नए युग का सूत्रपात किया। महर्षि दयानंद की सद्प्रेरणा से अनेक गुरूकुलों की स्थापना की गई। कन्या गुरूकुल (सासनी) हाथरस भी उसी माला की मणि है।

इस गुरूकुल का उद्देश्य कन्याओं को प्राचीन भारतीय वैदिक वातावरण में रखकर भारतीय संस्कृति के अनुरूप सीधा सादा जीवन व्यतीत करते हुये संस्कृत, व्याकरण, हिन्दी, अंग्रेजी, वेद, दर्शन, उपनिषद, इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान, गृहविज्ञान, भारतीय संस्कृति, संगीत, व्यायाम, मनोविज्ञान, कम्प्यूटर आदि की शिक्षा देकर योग्य नागरिक बनाना है। जिससे वे देश, धर्म और समाज की सेवा और उन्नति में सहभागी बन सकें। आर्य समाज ने निःसंदेह राष्ट्रीय शिक्षा की अनूठी प्रणाली का विकास किया और साथ ही स्त्रियों को शिक्षित करने पर बल देते हुये स्त्री शिक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य–योजना प्रस्तुत की।

आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 1875 में बम्बई में मथुरा के स्वामी विरजानन्द की प्रेरणा से की थी। यह आन्दोलन पाश्चात्य प्रभावों की प्रतिक्रिया स्वरूप हिन्दू धर्म में सुधार के लिए प्रारम्भ हुआ था। आर्य समाज के अनुयायी शुद्ध वैदिक परम्परा में विश्वास करते थे तथा मूर्ति पूजा, अवतारवाद, बलि, झूठे कर्मकाण्ड व अंधविश्वासों को अस्वीकार करते थे। उन्होंने छुआछूत व जातिगत भेदभाव का विरोध किया तथा स्त्रियों व शूद्रों को भी यज्ञोपवीत धारण करने व वेद पढ़ने का अधिकार दिया था। स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रन्थ आर्य समाज का आधार ग्रन्थ है। आर्य समाज का आदर्श वाक्य है – कृण्वन्तो विश्वमार्यम् जिसका अर्थ है– विश्व को श्रेष्ठ बनाते चलो।

प्रसिद्ध आर्यसमाजी जनों में स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंस राज, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, पंडित गुरूदत्त, स्वामी आनन्द बोध सरस्वती अछूतानन्द, चौधरी चरण सिंह, पण्डित वन्देमातरम रामचन्द्र राव, बाबा रामदेव आदि प्रमुखतः आते हैं।

वस्तुतः आर्य समाज शिक्षा, समाज सुधार एवं राष्ट्रीयता का आन्दोलन था। भारत के बहुत से स्वतन्त्रता संग्राम सैनानी, आर्य समाज से प्रेरित थे। स्वदेशी आन्दोलन की लोकप्रियता का मूल सूत्रधार आर्य समाज ही है। स्वामी दयानन्द जी ने धर्म परिवर्तन कर चुके लोगों को पुनः हिन्दू बनने की प्रेरणा देने के लिए शुद्धि आन्दोलन चलाया। नमस्ते शब्द का प्रयोग आर्य समाज की ही देन है। उन्होंने हिन्दी भाषा में सत्यार्थ प्रकाश तथा अनेक वेद भाष्यों की रचना की। उन्हीं के अनुयायी लाला हंसराज ने सन् 1886 में लाहौर में दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना की थी। सन् 1909 में स्वामी श्रद्धानन्द ने कांगड़ी में गुरूकुल विद्यालय की स्थापना की थी।

स्वामी दयानन्द सरस्वती देश की तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था से सन्तुष्ट नहीं थे। वे भारतीयों की शिक्षा प्रणाली को वैदिक मान्यताओं पर आधारित करना चाहते थे तथा ऐसी शिक्षा पद्धति विकसित करना चाहते थे जो देश की संस्कृति तथा परिस्थितियों के अनुकूल हो। उन्होंने स्वयं पश्चिमी शिक्षा पद्धति के भारतीय समाज पर पड़ रहे प्रतिकूल प्रभावों को देखा। वैदिक शिक्षा पद्धति का उनके द्वारा किया गया गहन अध्ययन तथा पश्चिमी शिक्षा पद्धति के समाज पर पड़ रहे कुप्रभावों का निदान ढूढ़ने की उनकी अदम्य इच्छा ने उन्हें शिक्षा

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

के प्रति अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार स्वामी जी ने पश्चिमी शिक्षा पद्धति के स्थान पर भारतीय शिक्षा पद्धति की विस्तृत योजना तैयार की जिसे उनके अनुयायियों ने आगे विस्तारित और क्रियान्वित कर भारतीय शिक्षा को नवजीवन प्रदान किया।

दयानन्द सरस्वती ने शिक्षा के समाजवादी स्वरूप का प्रतिपादन किया। उनकी शिक्षा व्यवस्था में गरीब–अमीर, ऊँच और नीच राजकुमार और किसान में कोई भेद नहीं था। जिस प्रकार से यह शिक्षा ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों के लिए अनिवार्य थी, उसी प्रकार से यह शूद्रों के लिए भी थी। समाजवाद की वास्तविक परिकल्पना उन्होंने गुरूकुल व्यवस्था में की जिसमें विद्यार्थियों को एक जैसा भोजन वस्त्र तथा शिक्षा प्रदान की जाती थी तथा सभी वर्ग के विद्यार्थी एक साथ भोजन करते थे।

आर्य समाज के शिक्षा दर्शन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है कि इसमें स्त्रियों की शिक्षा को महत्व दिया गया है। दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित स्त्री शिक्षा की मान्यता को आर्य समाज के कन्या गुरूकुलों, महिला महाविद्यालयों तथा कन्या विद्यालयों के माध्यम से क्रियान्वित किया गया है। भारत के सामाजिक पुर्नजागरण के इतिहास में आर्य समाज भी एक ऐसा आन्दोलन है, जिसने स्त्री शिक्षा को अपने कार्यक्रमों में प्राथमिकता दी तथा इसके द्वारा स्त्रियों की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा आर्थिक दशा सुधारने का संकल्प लिया।

आर्य समाज के तत्वाधान में दो प्रमुख शिक्षा पद्धतियों का विकास हुआ दयानन्द एंग्लो वैदिक शिक्षा पद्धति तथा गुरूकुल शिक्षा पद्धति। आर्य समाज के द्वारा स्त्री शिक्षा की उन्नति में इन दोनों पद्धतियों का योगदान रहा है।

आर्य समाज ने स्त्री शिक्षा के लिए जिन विभिन्न प्रकार की संस्थाओं का विकास किया है, उन्हें मुख्यतः दो वर्गों में बाँटा जा सकता है कन्या गुरूकुल और पुत्री पाठशाला।

डी0ए0वी0 संस्थाओं द्वारा स्थापित कन्या महाविद्यालय, कन्या हाईस्कूल, कन्या विद्यालय पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र और बंगाल में है। गुरूकुल शिक्षा प्रणाली की प्रमुख संस्थायें हैं– आर्य कन्या पाठशाला, नई दिल्ली, कन्या गुरूकुल हाथरस, जिला अलीगढ़ कन्या गुरूकुल, देहरादून कन्या, गुरूकुल हरिद्वार, कन्या महाविद्यालय वाराणसी, कन्या गुरूकुल न्यू राजेन्द्र नगर, दिल्ली आदि।

1886 में आर्य समाज द्वारा जालंधर में कन्या पाठशाला की स्थापना इस दिशा में यह पहला प्रयास था। आगे चलकर यह संस्था कन्या महाविद्यालय के नाम से विख्यात हुई। इसी को आधार बनाकर आर्य समाज ने भारत के अनेक स्थानों पर आर्य कन्या पाठशालायें, आर्य कन्या विद्यालय डी0ए0वी0 कन्या महाविद्यालय तथा डी0ए0वी0, गर्ल्स स्कूलों की श्रृंखला बनाई। दूसरी ओर कुछ आर्य समाजियों द्वारा कन्या गुरूकुल स्थापित किये गये, जो स्त्रियों को शिक्षा के आदर्श केन्द्र बन गये। यद्यपि 1947 में भारत विभाजन से आर्य समाज की अनेक शिक्षण संस्थायें पाकिस्तान में रह गयी और कुछ समय तक स्त्री शिक्षा की उन्नति अवरूद्ध रही तथापि शीघ्र ही आर्य समाज ने इस दिशा में सराहनीय प्रगति कर ली।

कन्या गुरूकुल महाविद्यालय (सासनी) हाथरस भारत का सर्वप्रथम कन्या गुरूकुल है, जिसकी स्थापना पंडित गणपति के पुत्र श्री मुरलीधर भज्जूराम देवर हाल निवासी हाथरस द्वारा मिती सावन सुदी 11 संवत् 1967 ता0 6 अगस्त सन् 1909 ई0 को हुई। प्रेरणा स्त्रोत दर्शनानन्द सरस्वती थे। गुरूकुल हेतु जमीन क्रय करने के उपरांत 24 अगस्त सन् 1910 ई0 से इस गुरूकुल का अस्तित्व जगमगान लगा।

कन्या गुरूकुल की सभा सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट के अन्तर्गत एक रजिस्टर्ड सभा है। इस समय सभा के प्रधान श्री रमेशचन्द्र आर्य (पूर्व आढ़ती) हाथरस है तथा मन्त्री श्री दीनदयाल सिंह सासनी है। स्थानीय प्रबन्ध मुख्यधिष्ठात्री द्वारा किया जाता है। वर्तमान समय में कन्या गुरूकुल महाविद्यालय (सासनी) हाथरस की मुख्याधिठात्री जी डॉ0 पवित्रा विद्यालंकार हैं तथा प्राचार्या सविता वेदालंकार हैं। स्थानीय प्रबन्ध सभा के हाथ में है।

गुरूकुल में भारत के प्राय सभी प्रदेशों की एवं कुछ विदेशों की कन्यायें भी शिक्षा प्राप्त करती हैं। धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा और अनिवार्य आश्रमवास गुरूकुल की विशेषता है। गुरूकुल का पाठ्यक्रम सोलह वर्ष का है जो बी0ए0 के समकक्ष है। उसे पूरा करने वाली स्नातिका एम0ए0 में प्रवेश पा सकती है। गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की, भारत सरकार द्वारा मान्य दशम श्रेणी (विद्याधिकारी) उत्तीर्ण कन्या, हाईस्कूल उत्तीर्ण के समकक्ष है। विद्या विनोद परीक्षा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, अलीगढ़, मुस्लिम विश्विद्यालय दिल्ली, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी महर्षि दयानन्द यूनिवसर्सिटी, रोहतक जैसे विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा इण्टर के समकक्ष स्वीकृत है। अलंकार परीक्षा बी0ए0 के समकक्ष है। गुरूकुल में धनी–निर्धन, जाति–पाति, ऊँच–नीच के सब भेद भुलाकर सब कन्याओं के साथ एक सा व्यवहार किया जाता है। सब कन्यायें एक सा भोजन करती हैं और एक से वस्त्र पहनती हैं। गुरूकुल की समस्त ब्रह्मचारिणियों का भोजन निरामिष, सात्विक और एक समान होता है। रोगियों के लिये विशेष भोजन की व्यवस्था है।

कन्या गुरूकुल में गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का पाठ्यक्रम चल रहा है। जून 1962 में भारत सरकार ने गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एक्ट 1956 की धारा 3 के अन्तर्गत डीम्ड यूनिवर्सिटी की मान्यता प्रदान की है। गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, भसारतीय विश्वविद्यालय संघ (ए0आई0यू0) तथा कॉमनवैल्थ विश्वविद्यालय संघ (ए0सी0यू0) का सदस्य है। इस विश्वविद्यालय में प्रथमा से उत्तरमध्यमा, माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद उ0प्र0 एवं शास्त्री, आचार्य सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय वाराणसी की भी परीक्षाएँ होती हैं। प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद की प्रभाकर तक की परीक्षाएँ भी होती हैं।

शासन द्वारा मान्य आई0टी0आई0 ट्रेंड कोपा (कम्प्यूटर ऑपरेटर एण्ड प्रोग्रामिंग असिस्टैन्ट) तथा सिलाई कटाई का औद्योगिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है। कोर्स में इण्टर अथवा समकक्ष उत्तीर्ण छात्रायें प्रवेश [illegible]

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

प्राथमिक विभाग, माध्यमिक विभाग, विद्याधिकारी विभाग, विद्याविनोद विभाग तथा महाविद्यालय विभाग हैं।

सामान्यतया शिक्षा काल 16 वर्ष का है किन्तु विशेष योग्यता रखने वाली कन्याओं हेतु स्वेच्छानुसार शिशु से सप्तम श्रेणी तक विशेष परीक्षा की व्यवस्था है, जो पूरक परीक्षा के साथ ली जाती है। परिश्रमी छात्राएँ इस प्रकार विशेष तैयारी करके अपना वर्ष बचा सकती है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि यह गुरूकुल बराबर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहा है। कन्या गुरूकुल में कन्याओं को वैदिक साहित्य का परिचय कराया जाता है तथा इस गुरूकुल में भारतीय संस्कृति और सभ्यता के अनुरूप शिक्षा दी जाती है।

इस गुरूकुल की अनेक स्नातिकाओं ने विशेष उन्नति करते हुये इस संस्था के नाम को उज्जवल किया। इस सन्दर्भ में सर्वप्रथम नाम गायत्री देवी का नाम है जो महारानी कॉलेज, जयपुर में रीडर के पद पर कार्यरत रहीं। उनके दोनों सुपुत्र भारतीय प्रशासनिक सेवा के अफसर हैं। इसी प्रकार श्रीमती दयावती जो मध्य प्रदेश में समाज सेवा के कार्य में संलग्न है तथा श्रीमती डॉ0 शारदा पंजाब विश्वविद्यालय में संस्कृत प्रवक्ता है। डॉ0 विमला स्नातिका, जिन्होंने दयानन्द और सायण की भाषा शैली पर तुलनात्मक अध्ययन कर पीएच0डी0 की उपाधि प्राप्त की है, पटना में कार्य कर रही है। श्रीमती तारा जयपुर में एडवोकेट रही और बार एसोसिएशन की अध्यक्ष रही। दो स्नातिकाए नेपाल तथा एक स्नातिका अफ्रीका में वैदिक विचारधारा के प्रसार में संलग्न है। इनके अतिरिक्त भी अनेक स्नातिकाएँ शैक्षिक क्षेत्र में आर्य समाज के प्रचार एवं प्रसार के कार्य में संलग्न है।

निष्कर्ष– वैदिक धर्म और आर्य संस्कृति के प्रचार और प्रसार में संलग्न यह संस्था निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। इस गुरूकुल में भारतीय वैदिक संस्कृति के अनुरूप ब्रहाचर्य पद्धति द्वारा बालिकाओं को शिक्षा दी जा रही है। यह गुरूकुल आर्य शिक्षिकाओं तथा दयानन्द के सन्देश को घर–घर पहुँचा कर इस संस्था ने महिला प्रगति के लिय सराहनीय कार्य किया है। यह गुरूकुल कन्याओं को वैदिक परम्परा की शिक्षा नवीन ज्ञान–विज्ञान के साथ देने का कार्य कर रहा है। महिलाओं को उन्नति के समान अवसर पाने के लिये यह गुरूकुल महाविद्यालय योग्य बना रहा है। वर्तमान में ऐसी संस्थाएँ नारी शिक्षा के द्वारा क्षेत्र में समाज की उन्नति के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रहीं हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Internet-www.google.com https://hiwikipedia.org/5kgc
2. शोध गंगा, शोभा शुक्ला, इतिहास विभाग रविशंकर विश्वविद्यालय, रामपुर (म0प्र0) 1989 अध्याय 3, आर्य समाज का शिक्षा दर्शन पेज 53 राम रतन स्वामी दयानन्द एज एन एजूकेशन दयानन्द कमेमोरेशन वॉल्यूम पृ0 130 पेज 67.
3. शताब्दी स्मारिका, कन्या गुरूकुल, महाविद्यालय (सासनी) हाथरस, 11, 12, 13 नवम्बर 2011.

*****